

# Gheuniya Pancharati PDF

आरती साईबाबा। सौख्यदातार जीवा। चरणरजातली।  
द्यावादासा विसावा, भक्तां विसावा ॥ आ० ॥१०॥  
जाळूनियां अनंग। स्वस्वरूपी राहे दंग। मुमुक्षुजनां दावी। निज  
डोळां श्रीरंग ॥ आ० ॥१॥  
जया मनी जैसा भाव। तया तैसा अनुभव। दाविसी दयाघना।  
ऐसी तुझी ही माव ॥ आ० ॥२॥  
तुमचे नाम ध्याता। हरे संसृती व्यथा। अगाध तव करणी मार्ग  
दाविसी अनाथा ॥ आ० ॥३॥  
कलियुगीं अवतार। सगुणब्रह्म साचार। अवतीर्ण झालासे। स्वामी  
दत्त दिगंबर ॥ आ० ॥४॥  
आठां दिवसां गुरूवारीं। भक्त करिती वारी। प्रभुपद पहावया।  
भवभय निवारी ॥ आ० ॥५॥  
माझा निजद्रव्यठेवा। तव चरणरजसेवामागणें हेंचि आतां। तुम्हां  
देवाधिदेवा ॥ आ० ॥६॥  
इच्छित दीन चातक। निर्मल तोय निजसुख। पाजावें माधवा या।  
सांभाळ आपुली भाक ॥ आ० ॥७॥

pdfinabox.com